महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

कक्षा- एम.ए./एम.फिल./पीएच्.डी.

विषय- काव्यप्रकाशः

उपविषय- शब्दशक्तिः

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

शब्दशक्ति विवेचन

शब्द के स्वरूप निर्माण की प्राचीनतम प्रसिद्ध परम्परा वेद-उपनिषदों में प्राप्त होती है। किन्तु साहित्यशास्त्र में आचार्य भरत से लेकर भामह-दण्डी-मम्मट आदि प्रायः सभी आचार्यों ने शब्दार्थ के विषय में समान मत का पोषण किया हैं। आचार्य ने काव्यलक्षणों में शब्द एवं अर्थ का समान प्राधान्य माना है। साहित्यशास्त्र का मुख्यविषय काव्य है और उस काव्य का शरीर, शब्द और अर्थ का ही समन्वित रूप है।

शब्दशक्ति का अर्थ

शब्दशक्ति दो शब्दों के योग से बना है शब्द और शक्ति। शब्द उस सार्थक ध्वनिसमूह को कहते हैं, जिसमें भाव-बोधन अथवा अर्थ वहन करने की क्षमता होती है। शक्ति शब्द शक् धातु एवं क्तिन् प्रत्यय के योग से बना है। और इसका अर्थ है- सामर्थ्य। परन्तु साहित्य में शब्दशक्ति का स्वरूप है - **अर्थ बोधनानुकुल-पद पदार्थ सम्बन्धरूपवृत्तिविशेषः।** सम्पूर्ण विश्व का प्रत्येक कार्य किसी न किसी शक्ति की प्रेरणा से ही सम्पादित होता है, यह तो शाश्वत है। इस नियम के अनुसार शब्द भी अपना अर्थ देने का कार्य-जिस शक्ति के द्वारा पूरा करता है, उसे शब्द की शक्तियाँ अर्थात् शब्द-शक्ति नाम से अभिहित किया गया है।

प्रत्येक शब्द से जो अर्थ का ज्ञान होता है, वह अर्थ बोध कराने वाला व्यपार शब्द की शक्ति है।

साहित्यशास्त्र में शब्दशक्ति की आवश्यकता

शब्द और अर्थ का समप्राधान्यता साहित्यशास्त्र में मिलता है। ‘कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे’ इस वाक्य से शब्द और अर्थ का चारूत्वपूर्ण वैभव प्रतिपादन ही इसका लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये प्रयुक्त शब्द का अर्थ चारुता से प्रयोग करने के लिये शब्दशक्ति की महत् आवश्यकता है।

काव्यप्रकाश में शब्दशक्ति

आचार्य मम्मट का काव्यप्रकाश ग्रन्थ साहित्य जगत् में बहुजनसमाद्रित है। इस ग्रन्थ के द्वितीयोल्लास और तृतीयोल्लास में शब्दशक्ति पर विचार किया गया है। -

शब्द के प्रकार- 1.वाचक 2.लक्षक 3. व्यञ्जक

शक्ति या व्यापार- 1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना

अर्थ के प्रकार- 1. वाच्यार्थ/अभिधेयार्थ 2.लक्ष्यार्थ 3. व्यङ्ग्यार्थ

शब्द के प्रकार

लोक में बोलने वाले अथवा कहने वाले को वाचक कहते हैं। किन्तु काव्यशास्त्र में उसी को सङ्केतितार्थ संज्ञा दी गयी है। अतः काव्यप्रकाशकार ने कहा-

साक्षात्सङ्केतितं योऽर्थमभिधत्ते स वाचकः।

सङ्केत का अर्थ अस्माच्छच्पदादयमर्थो बोद्धव्यः अर्थात् जिस शब्द से जिस अर्थ का बोध होता है वह वाचक है। शब्द विशेष में सङ्केत का आधार-

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमानकोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च
वाक्यस्य शेषाद् विवृतेर्वदन्ति सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः॥

(न्यायसिद्धान्तमुक्तावली)

इस कारिका में शब्द के बोध के हेतु आठ कारण वताये गये हैं-

1- व्याकरणम्　　2- उपमानम्　　3- कोशः
4- आप्तवाक्यम्　　5- वृद्धव्यवहारः /लोकव्यवहारः
6- वाक्यशेषः　　7- विवृत्तिः/ व्याख्या
8- सिद्धपदस्य सान्निध्यम् इति

व्याकरण- भू सत्तायाम् आदि धातु पाठ से भू का ज्ञान।

उपमान- गौस्तथा गवयः।

कोश- आप्तवाक्य (गुरू,पिता) आदि के वाक्य से बालक को नये पदार्थ का ज्ञान।

आप्तवाक्य-

व्यवहार-

वाक्यशेष- पूर्वसन्दर्भ से सङ्केत होता है।

विवृति (व्यख्या)- व्याख्या से।

सिद्ध (ज्ञान) - प्रसिद्धपद का समभिव्यवहार।

पदसान्निध्य- प्रभिन्न कमलोदरे मधूनि मधुकरः पिबति। यहाँ पर मधुकर शब्द का भ्रमरशब्दे प्रसिद्धि है।

काव्यप्रकाशकार के अनुसार वाचक शब्द के प्रकार

सङ्केतितश्चतुर्भेदो जात्यादिर्जातिरेव वा।

जाति-	गोत्व आदि
गुण-	शुक्ल आदि
क्रिया-	पठति आदि
यदृच्छारूप-	देवदत्त आदि

लाक्षणिक शब्द

वाचक शब्द जैसा लक्षक शब्दों को जानने के लिये आचार्य ने कोई लक्षण नहीं दिया। किन्तु हम कह सकते है, कि यह-दैनिक जीवन में तथा साहित्य में भी ऐसे बहुत से शब्दों का प्रयोग करते हैं, जिनका मुख्यार्थ ठीक नहीं वैठ पाता है अर्थात् शब्दों के साथ उसके प्रचलित अर्थ की संगति नहीं वैठती। यथा- **सिंहो माणवकः।**

व्यञ्जक शब्द

लक्षणावृत्ति के सहारे जैसे लाक्षणिक शब्द से लक्ष्यार्थ की प्राप्ति होती है। उसी तरह लक्ष्यार्थ से जब सम्पूर्ण अर्थ का प्रकाश सम्पूर्ण रूप से नहीं होता है, तब वह शब्द व्यञ्जकशब्द कहलायेगा।

शब्द व्यापार का परिचय

पद के साथ पदार्थ का सम्बन्ध शक्ति कहलाता है, और इस शब्द से यह अर्थ जानना चाहिए, इस रूप में इसे समझा जा सकता है। इस शक्ति को वृत्ति या व्यापार शब्द से कहा अभिहित किया गया है। शब्द से अर्थ के अवगमन तक जो उपक्रम होता है उसे शब्द व्यापार कहते हैं।

शब्द व्यापार के तीन प्रकार हैं-

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यञ्जना

अभिधा व्यापार (वृत्ति)

अभि उपसर्ग पूर्वक, धा धातु से अतश्चोपसर्गे सूत्र से अङ प्रत्यय करने पर अभिधा निष्पन्न होता है। अभिधीयते सङ्केतितः अर्थः अनया इति अभिधा। काव्यप्रकाशकार के मतानुसार-

स मुख्योऽर्थस्तत्र मुख्यो व्यापारोऽस्याभिधोच्यते।

अर्थात् जिसके द्वारा साक्षात् सङ्केतित अर्थ का बोध होता हो वह शब्द की प्राथमिक शक्ति अभिधा शक्ति कहलती है।

यथा- गङ्गायां घोषः।

इस वाक्य के श्रवण के साथ ही गङ्गा नदी की धारा में घोष है इस अर्थ का अवगमन होता है। अतः यह साक्षात् संकेतित अर्थ द्वारा प्राप्त शब्द की अभिधा शक्ति है।

लक्षणा व्यापार

'लक्ष्यते इति लक्षणा' इस व्युत्पत्ति के अनुसार लक्ष धातु से भाव अर्थ में युच् प्रत्यय करने से लक्षणा शब्द निष्पन्न होता है। लक्षणाव्यापार से लक्ष्यार्थ की प्राप्ति होती है। इस का लक्षण है-

मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत्सा लक्षणारोपिता क्रिया॥

लक्षणा के विषय में तीन हेतु का ज्ञान

क. मुख्यार्थ की बाधा

अर्थात् जो शब्द जिस शब्द में प्रसिद्ध है उस अर्थ में उसके अन्वय में बाधा ही मुख्यार्थबाध का अभिप्राय है। यथा- गङ्गायां घोषः। गङ्गा शब्द का मुख्यार्थ है प्रवाह रूपी नदी। किन्तु गङ्गा की धारा में कुटी का किसी भी प्रकार होना सम्भव नहीं हो सकता इसलिए यहाँ मुख्यार्थ का बाध है।

ख.लक्ष्यार्थ एवं मुख्यार्थ में सम्बन्ध-

मुख्यार्थ में बाधा होने के वाद लक्ष्यार्थ को प्राप्त करने के लिये रूढी अथवा प्रयोजन का आश्रय लिया जाता है। यथा- **गङ्गायां घोषः** इसमें गङ्गा शब्द का सामीप्यसम्बन्ध से गङ्गा तट पर घोष इस अर्थ की प्राप्ति होती है। यह सम्वन्ध पाच प्रकार का होता हैं-

अभिध्येन सम्बन्धात् सादृश्यात् समवायतः।
वैपरीत्यात् क्रियायोगाल्लक्षणा पञ्चधा मता॥

सारुप्य सम्बन्ध- मुखं चन्द्रः
सामीप्यात्- गङ्गायां घोषः
समवायात्- अग्रहस्ते हस्तः
वैपरीत्यात्- अहो पूर्णं सरो यत्र लुठन्तः स्नान्ति मावनाः
क्रियायोगात्- अतक्षा तक्षा

ग.रूढि अथवा प्रयोजन-

लाक्षणिक शब्द का किसी प्रयोग विशेष में प्रसिद्धि हो, अथवा किसी प्रयोजन को सिद्ध करने के लिये उसका प्रयोग किया हैं।

व्यञ्जना व्यापार

वि उपसर्गपूर्वक अञ्जु व्यतिम्रक्षकान्तिगतिषु इस धातु से णिजन्त ण्यासश्रन्थो युच् इस सूत्र से भावे युचि प्रत्यये स्त्रीत्वविवक्षा में व्यञ्जना सिद्ध है। एक विशेष प्रकार के विलक्षण अर्थ को प्रकट करने वाला व्यञ्जना व्यापार कहलाता है, जो मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ से भिन्न एक नवीन अर्थ का बोधक होता है। इस का लक्षण इस प्रकार है-

यस्य प्रतीतिमाधातुं लक्षणा समुपास्यते।
फले शब्दैकगम्येऽत्र व्यञ्जनान्नापरा क्रिया॥

उदाहरण-

गङ्गायां घोषः

इस वाक्य में जैसे शैत्यपावनत्वादि जो प्रयोजनरूपार्थ अर्थ है वह व्यञ्जना द्वारा प्राप्त होता है।

व्यञ्जनाभेद

क.शाब्दी

अ. अभिधामूला

आ. लक्षणामूला

ख.आर्थी

अ. वाच्यार्थ व्यञ्जकता

आ. लक्ष्यार्थ व्यञ्जकता

इ. व्यङ्ग्यार्थ व्यञ्जकता

शाब्दीव्यञ्जना- अभिधामूला

अनेकार्थस्य शब्दस्य वाचकत्वे नियन्त्रिते।
संयोगाद्यैरवाच्यार्थधीकृद्व्यापृतिरञ्जनम्॥

अर्थात् अभिधामूलक व्यञ्जना वह होता है जो अनेकार्थक पद प्रयोगों में उनकी वाचकता के संयोग आदि के द्वारा नियन्त्रित हो जाने पर एक ऐसे अर्थ का प्रत्यायन करा दिया करती है जिसे कभी भी वाच्य-साक्षात् संकेतित अभीधाबोध्यरूप अर्थ नहीं कहा जा सकता। जैसे-

संयोगो विप्रयोगश्च साहचर्यं विरोधिता।
अर्थः प्रकरणं लिङ्गं शब्दस्यान्यस्य सन्निधिः॥
सामर्थ्यमौचिती देशः कालो व्यक्तिः स्वरादयः।
शब्दार्थस्यानवच्छेदे विशेषस्मृतिहेतवः॥

उदाहरण

क.संयोग- सशङ्खचक्रो हरिः
ख.विप्रयोग- अशङ्खचक्रो हरिः
ग.साहचर्यम्- राम-लक्ष्मणाविति दशरथी
घ.विरोधिता- रामार्जुनगतिस्तयोरिति
ङ.अर्थ- स्थाणुं भज भवच्छिदे
च.प्रकरण- सर्वं जानाति देव इति युष्मदर्थे
छ.लिङ्ग- कुपितो मकरध्वज इति कामे
ज.अन्य शब्द की सन्निधि- देवस्य पुरारातेः इति शम्भौ
झ.सामर्थ्यम्- मधुना मत्तः कोकिल इति वसन्ते
ञ.औचित्य- पातु वो दयितामुखम् इति साम्मुख्ये
ट.देश- भात्यत्र परमेश्वर इति राजधानीरूपाद्देशाद्राजनि
ठ.काल- चित्रभानुर्विभाति इति दिने रवौ रात्रौ वह्नौ
ड.व्यक्ति- मित्रं भाति इति सुहृदि
ण.स्वर- मित्रो भाति इति रवौ

आर्थीव्यञ्जना

वक्तृबोद्धव्यकाकूनां वाक्यवाच्यान्यसन्निधेः ॥
प्रस्तावदेशकालादेर्वैशिष्ट्यात्प्रतिभाजुषाम् ।
योऽर्थस्यान्यार्थधीहेतुर्व्यापारो व्यक्तिरेव सा ॥

क.वक्ता
ख.बोद्धव्य
ग.काकु
घ.वाक्य
ङ.वाच्य
च.अन्यसन्निधिः
छ.प्रस्ताव
ज.देश
झ.काल
ञ.चेष्टादिके वैशिष्ठ्य से

लक्षणा भेद

मम्मटाचार्य ने लक्षणा के भेदों का उपस्थापन करते हुए लिखा है-

लक्षणा तेन षड्विधा।

अर्थात् लक्षणा छः प्रकार के होते हैं।

लक्षणा के छः प्रकार उदाहरणों के साथ

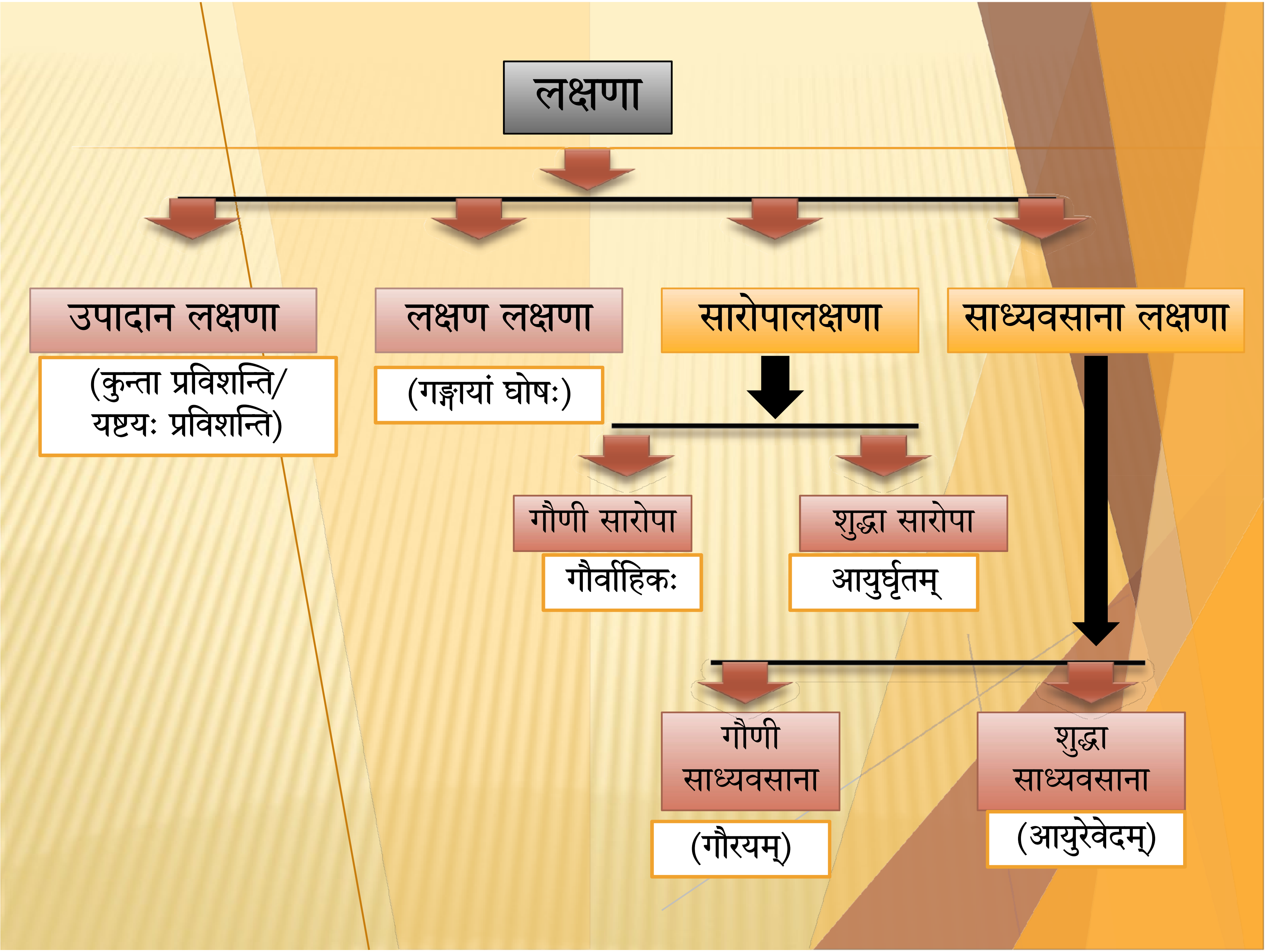
लक्षणा
उपादान लक्षणा
(कुन्ता प्रविशन्ति/ यष्टयः प्रविशन्ति)
लक्षण लक्षणा
(गङ्गायां घोषः)
सारोपालक्षणा
साध्यवसाना लक्षणा
गौणी सारोपा
गौर्वाहिकः
शुद्धा सारोपा
आयुर्घृतम्
गौणी साध्यवसाना
(गौरयम्)
शुद्धा साध्यवसाना
(आयुरेवेदम्)

इस प्रकार यह सिद्ध है कि शब्द शक्ति काव्यशास्त्र का एक महत्त्वपूर्ण और आधार भूत विषय है।

धन्यवादः